ग्रामीण पर्यटन के विविध आयाम और विकसित भारत

डॉ0 पंकज कुमार
असि0प्रो0 (भूगोल विभाग)
जे0वी0 जैन कॉलेज, सहारनपुर
email-drpankajgeography@gmail.com

डॉ0 हिमानी
असि0प्रो0 (भूगोल विभाग)
जे0वी0 जैन कॉलेज, सहारनपुर
email-himanityagisre@gmail.com

सारांश– माना जाता है कि भारत की आत्मा गाँवों में बसती है। वर्षों तक पर्यटन की नजरों से दूर रहे यह गाँव आज अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक परम्परा, रीति–रीवाज, प्राकृतिक परिवेश और सतत् विकास की एक नई आशा के रूप में उभरकर सामने आए है। आधुनिक नगरीय विकास की प्रक्रिया और तेज रफ्तार की तुलना में गाँव शांति, अपनापन तथा जीवनयापन की धीमी परन्तु आत्मीय लय प्रदान करते हैं। लम्बे समय तक उपेक्षित रहे गाँव के इसी संदर्भ में ग्रामीण पर्यटन एक अवधारणा के रूप में उभरा है जो गाँव की सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विशेषताओं को संरक्षित रखते हुए विकास के नये द्वार खोल रहा है। वर्तमान वैश्विक तथा नगरीयकरण के दौर में नगरीय जीवन की भागमभाग में थके–हारे लोग प्राकृतिक और शांत वातावरण की तलाश में ग्रामीण जीवन की ओर आकृर्षित हो रहे हैं जिसके कारण ग्रामीण पर्यटन की भूमिका निरन्तर बढ़ती जा रही है।

[Kumar, P. and Himani. **ग्रामीण पर्यटन के विविध आयाम और विकसित भारत**. *The International Journal of Interpretation, Observation and Analysis*, 2026; Volume 2, Issue 1 (April-June): Page Number: 82-105. ISSN 2349-0713, Peer-reviewed (online/offline), Refereed, Indexed and International Journal (Since 2013), Global Impact Factor: 6.489

प्रमुख शब्द : ग्रामीण पर्यटन विकसित भारत संस्कृति इको टूरिजम।

प्रस्तावना:–

ग्रामीण पर्यटन की संकल्पना का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण जीवन शैली, कृषि आधारित गतिविधियों, पारम्परिक कला एवं संस्कृति, स्थानीय एवं क्षेत्रीय व्यंजन, प्राकृतिक मनोहारी दृश्यों और ग्रामीण आतिथ्य सत्कार का अनुभव प्रदान करना है। पर्यटन का यह एक ऐसा स्वरूप है, जो पाँच सितारा या सात सितारा होटलों अथवा अत्यधिक व्यवसायिकरण से दूर स्थानीय समुदायों की भागीदारी से प्रभावित है। यद्यपि ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन की अपार संभावनाएं विद्यमान है परंतु चुनौतियों की भी कोई कमी नहीं है। अपर्याप्त अवसंरचना डिजिटल पहुँच की सीमित संभावनाएं तथा विपणन कौशल की कमी आदि अनेक बाधाएं भी हैं। विकसित भारत की परिकल्पना समावेशी संतुलन और सतत् विकास पर आधारित है। ग्रामीण पर्यटन इस लक्ष्य की प्राप्ति में एक महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। यह स्थानीय स्तर पर स्वरोजगार के अवसर उत्पन्न करता है। महिलाओं युवाओं को आर्थिक गतिविधियों से जोडता है, जिससे सांस्कृतिक, आत्म गौरव और राष्ट्रीय पहचान मजबूत होती है। संक्षेप कहा जा सकता है कि– ग्रामीण पर्यटन मात्र यात्रा अनुभव नहीं है अपितु ग्रामीण भारत के सांस्कृतिक और सतत् विकास एवं भविष्य के मध्य एक सेतु है। प्रस्तुत शोध पत्र में ग्रामीण पर्यटन के उपरोक्त विविध पहलुओं को समझाने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य:– प्रस्तुत शोध–पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य है।

1. ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन की प्रमुख गतिविधियों और सम्भावनाओं की पहचान करना।
2. सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रभावों का मूल्याकन करना।

Paper: Received: 04.06.2026 **Reviewed: 12.06.2026** **Accepted: 19.06.2026** **Published: 29.06.2026**

3. ग्रामीण पर्यटन के माध्यम से क्षेत्रीय विकास की सम्भावनाओं का अध्ययन।
4. ग्रामीण पर्यटन और विभिन्न स्थानीयों की भागीदारी के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन।
5. ग्रामीण पर्यटन के सन्दर्भ में सतत विकास के सिद्धान्तों की प्रासंगिकता का परीक्षण एवं मूल्यांकन करना।
6. ग्रामीण पर्यटन के विकास में आने वाली प्रमुख चुनौतियों की पहचान करना।
7. ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन को प्रभावी बनाने के लिए नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना ।

विधि तन्त्रः– प्रस्तुत शोध–पत्र वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक, प्रकृति का है। जिसके लिए आँकडो का संग्रह द्वितीयक स्रोतों के आधार पर किया गया है। जिसके लिए पर्यटन विभाग की रिपोर्ट, जनगणना रिपोर्ट विभिन्न शोध पत्र, पर्यटन विशेषांक, पर्यटन भूगोल से जुड़ी स्तरीय पुस्तके पत्रिकाओं तथा विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित लेखों आदि का सहारा लिया गया है। आँकडों का विश्लेषण सांख्यिकीय विधियों के माध्यम से किया गया है। साथ ही ही पर्यटन की विभिन्न सूचनाओं को रेखाचित्र तथा मानचित्र द्वारा विश्लेषित किया गया है।

ग्रामीण क्षेत्रों में इकोटूरिज्मः– विगत कुछ वर्षों में पर्यटन की धारणा में परिवर्तन देखने में आया है। भारत का इकोटूरिज्म क्षेत्र तेजी से फैल रहा है। जो ग्रामीण क्षेत्रों में परिवर्तन और विकास की अपार सम्भावनाऐ लिये हुये है। वर्ष 2024 मे इसका बाजार मूल्य 19.8 बिलियन अमेरिकी डालर था जिसकी वर्ष 2033 तक 9.8 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक दर से 50.4 बिलियन अमेरीकी डालर तक पहुँचने की सम्भावना है। पर्यटन क्षेत्र में वर्ष 2024 में राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में 5 प्रतिशत का योगदान दिया। वर्ष 2023 से 2509 मिलिमन घरेलू पर्यटक आये। यह ग्रामीण और प्रकृति आधारित अनुभवों की व्यापक माँग की ओर संकेत करता है। वर्ष 2024 में 9.66 मिलियन विदेशी पर्यटकों का भारत में आगमन हुआ, जो 2023 की तुलना में 19.8 प्रतिशत अधिक था। जिससे 277842 करोड़ रूपये विदेशी मुद्रा की प्राप्ति हुई। भारत के सबसे बड़े रोजगार सृजनकर्ताओं में कुल नौकरियों का 12.5 प्रतिशत यात्रा और पर्यटन से जुड़ा हुआ है। ग्रामीण और पारिस्थतिकीय रूप से संवेदनशील क्षेत्रों के लिए इको टूरिज्म आय विविधिकरण, महिला उद्यमिता और मुख्य रोजगार के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है।

विभिन्न अध्ययनों से जानकारी प्राप्त हुई है कि इको टूरिज्म में लगे समुदायों की वार्षिक आय में इस क्षेत्र के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों के लोगों की तुलना में 35–60 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई है। जैसे केरल का पेरियार टाइगर रिर्जव प्रतिवर्ष 60–80 करोड़ का राजस्व उत्पन्न करता है। इसी प्रकार मेघालय के मावलिननॉन्ग (एशिया का सबसे स्वच्छ गाँव) में वर्ष 2010 से घरेलू आय में 60 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई है। केरल में 18000 महिलाएँ इको टूरिज्म होमस्टे और हस्तशिल्प से जुड़े सूक्ष्म उद्यमों का प्रबंधन करती है। नागालैण्ड के खोनोमा में इको–टूरिज्म ने युवाओं के बाहरी प्रवास को 30 प्रतिशत तक कम कर दिया है। युवको को अब टूर गाइड, आतिथ्य कर्मचारी ओर संरक्षक कार्यकर्ताओं के रूप में रोजगार प्राप्त हो रहा है। इको टूरिज्म को संरक्षण वित्तपोषण तन्त्र के रूप में तेजी से मान्यता मिल रही है। अतिथि शुल्क इको लॉज राजस्व और सामुदायिक योगदान जैव विविधता संरक्षण और पारिस्थितिकी तन्त्र पुनर्स्थापन में लगाए जाते हैं।

Paper: Received: 04.06.2026 Reviewed: 12.06.2026 Accepted: 19.06.2026 Published: 29.06.2026

तालिका–1
ग्रामीण क्षेत्रों में इको पर्यटन से संबंधित प्रमुख नीतियाँ और विशेषताएँ

नीतियाँ	प्रमुख उद्देश्य	ग्रामीण घटक
राष्ट्रीय रणनीति और ग्रामीण पर्यटन के लिए रोडमैप	रोजगार सृजन, स्थानीय संस्कृति को बढ़ावा, अन्य कल्याणकारी योजनाओं के साथ समन्वय, ग्रामीण पर्यटन को सतत और समावेशी बनाना ।	कलस्टर विकास, स्थानीय हस्तशिल्प, होमस्टे, गाँवों के लिए विपणन समर्थन, शासन/संस्थागत सहायता।
स्वदेश दर्शन/ स्वदेश दर्शन 2.0	थीम आधारित सर्किट विकास (जिसमें ग्रामीण सर्किट शामिल हैं), अवसंरचना सुधार, पर्यटक अनुभव, समुदाय की भागीदारी, स्थिरता।	ग्रामीण सर्किटः 'ग्रामीण सर्किट' थीम के अंतर्गत बिहार, केरल में विशिष्ट परियोजनाएं। चिह्नित सर्किटों में ग्रामीण पर्यटन अवसंरचना भी शामिल।
PRASHAD योजना	तीर्थ एवं आध्यात्मिक पर्यटन अवसंरचना का विकास, पहुँच, सुविधाओं में सुधार, विरासत के साथ एकीकरण। कुछ स्थल ग्रामीण/गाँवों में स्थित।	कुछ तीर्थस्थल ग्रामीण क्षेत्रों में हैं, परियोजनाओं में स्थानीय समुदायों को लाभ देने वाली सुविधाएं शामिल हैं।
इको टूरिज़्म/सतत पर्यटन रणनीति और दिशा–निर्देश	संरक्षण को बढ़ावा देना, जैव विविधता की रक्षा, संरक्षित क्षेत्रों के आसपास इको टूरिज़्म को विनियमित करना पारिस्थितिकीय और सामाजिक–सांस्कृतिक स्थिरता सुनिश्चित करना।	वनों, वन्यजीवों और जैव विविधता क्षेत्रों के पास के ग्रामीण क्षेत्र लक्षित समुदाय की भागीदारी आवश्यक, संरक्षित क्षेत्रों के बफर जोन के लिए परामर्श।

पर्यटन और ग्रामीण संस्कृतिः–

भारतीय कला और संस्कृति राष्ट्र की विरासत के प्रतिरूप है। वैश्वीकरण और नगरीयकण के इस दौर में जहाँ यह संस्कृति कहीं विलुप्त होने के कगार पर पहुँच रही थी, वहीं ग्रामीण पर्यटन ने उसे एक नई पहचान, तथा नया मंच प्रदान किया है। अगर हम अपनी आँखे बन्द करके भी सुने तब भी भारतीय गाँवों की धड़कन हमे सुनाई देगी। परन्तु इस भागदौड और मशीनी दुनिया में इस शान्त कलात्मकता का अधिकांश हिस्सा स्मृतियों में लुप्त होने का खतरा मन्डारा रहा है। भारत का प्रति एक ग्रामीण समुदाय अपनी अलग पहचान और रंग–रूप रखता है, यहाँ काम को ही पूजा माना जाता है। बांकुडा की टेराकोटा की मूर्तियों, माजुली के मुखौटे, ओड़िसा के स्क्रॉल चित्र तथा कच्छ के कढ़ाईदार दर्पण केवल शिल्प नहीं है यह भारत के ग्रामीण क्षेत्रों की संस्कृति की शब्दावली है। परन्तु आज गाँव की युवा पीढ़ी नगरों की ओर आकर्षित होती जा रही है। इस परम्परा का सूत्र कमजोर पड़ रहा है। जब एक बुनकर किसी कारखाने में काम करना शुरू कर देता है या एक चित्रकार ड्राइवर बन जाता है तो यह परिवर्तन किसी भी प्रकार के कौशल को मौन कर देता है। पर्यटन इस कहानी को पुनः बदलने की क्षमता रखता है। एक पर्यटक जब किसी लोक संगीतकार के साथ बैठकर बात करता है या किसी शिल्पकार को कार्य करते हुए देखता है, तो वह अपने साथ एक कहानी ले जाता है। ऐसी

https://ijioa.com/ cosmospub2023@gmail.com

Paper: Received: 04.06.2026 Reviewed: 12.06.2026 Accepted: 19.06.2026 Published: 29.06.2026

मुलाकातों से ओड़िसा के रघुराजपुर और गुजरात के होडका में लोग फिर से खुश और आत्मविश्वास से भर गए हैं। सम्पूर्ण भारतवर्ष में कांचीपुरम मे बुनाई कार्यशालाएँ, जयपुर में नीली मिट्टी के बर्तन के सत्र और त्रिपुरा में बॉस शिल्प प्रदर्शन सांस्कृतिक शिक्षा विद्यालय बन गए हैं। एक भारत श्रेष्ठ भारत के तहत आने वाले छात्र जीवन्त उदाहरणों के माध्यम से स्थिरता के बारे मे सीखते है नई शिक्षा नीति द्वारा इसे और अधिक व्यापक स्तर पर प्रोत्साहित किया जा रहा है। वर्ष 2022 में शुरू की गई स्वदेश दर्शन 2.0 और 2023 में शुरू की गई पी०एम विश्वकर्मा योजना प्रशिक्षण, ऋण और डिजिटल पहुँच प्रदान करके इस बदलाव को मजबूत करती है। डिजीटल प्रदर्शनियों, ई–कॉमर्स प्लेटफार्म और सोशल स्टोरीटेलिंग के माध्यम से, गाँव में कार्य कर रहे कारीगरों को अब वह प्लेटफार्म मिल रहा है जिसकी कल्पना करना भी पहले असम्भव था। जी आई टैग शिल्प को स्थान का पर्याय बनने में मदद कर रहे हैं। भारत में मधुबनी की चित्रकारी, चन्नपटना के लकड़ी के खिलौने, पोचमपल्ली अपने इकत के लिए, कुल्लू के शॉल आदि आज विश्व स्तर पर प्रसिद्धी प्राप्त कर रहें है। अनेक ट्रैवलिंग कम्पनियाँ **क्राफ्ट ट्रेल्स ऑफ इण्डिया** का आयोजन करती है। एक छोटे से छोटा युवा शिल्पकार अपनी प्रक्रिया का छोटा सा वीडियो बना कर विश्व भर के लोगों के समक्ष पहुँचाता हैं। आने वाली पीढ़ी के लिए डिजिटल दुनिया ने इस परम्परा को आंकक्षा में बदल दिया है। एक लोक गायक जो कभी केवल फसल मेलों में हो अपनी प्रस्तुति देता था आज वह उन दर्शकों के लिए भी गाता है जो न केवल उसकी धुन बल्कि उसके अर्थ को भी महत्व देते हैं। एक कुम्हार जिसका नाम कभी अज्ञात था वह भी आज अपने काम को विश्व स्तर पर पहुँचा रहा है। भारत की ग्रामीण कला धर्म, सटीकता और सन्तुलन के मूल्यों को दर्शाती है। पर्यटन के माध्यम से इसे बढ़ावा देना व्यावसायीकरण का कार्य नही बल्कि पुनरुद्वार का कार्य है।

ग्रामीण पर्यटन और रोजगारः–

ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटकों को आकृर्षित करने की अपार सम्भावनाऐं है। ग्रामीण क्षेत्रों के विकास और उन्हें सुगम्य बनाने के लिए एकीकृत दृष्टिकोण इस क्षमता का सफलतापूर्वक दोहन करने विकसित भारत के निर्माण में ग्रामीण भारत के योगदान को और अधिक बढ़ा सकता है। ग्रामीण पर्यटन समावेशी विकास का सबसे उत्तम उदाहरण है। इससे न केवल देश की आय में वृद्धि हो रही है। बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर की बढ़ रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों की प्राकृतिक सुन्दरता, संस्कृति और सादगी को उजागर करके यहाँ के युवाओं और विशेष रूप से महिलाओं को सशक्त बनाया जा सकता है। स्थानीय उद्योगों को प्रोत्साहित करके रोजगार के ओर अधिक अवसर पैदा किये जा सकते है। इन सभी के सकारात्मक प्रभावों से न केवल रोजगार पैदा हो रहे है, अपितु ग्रामीण संस्कृति, निवास, परंपरा, क्षेत्रीय व्यंजन और जैव विविधता को भी संरक्षण मिलता है। जिसका सबसे बड़ा उदाहरण जनवरी 2025 में उ०प्र० के प्रयागराज में आयोजित महाकुम्भ मेला है, जिसमे लगभग 65 करोड़ से अधिक तथा माघ मेला 2026 में 22 करोड़ लोग शामिल हुए थे। इस विशाल आयोजन में धार्मिक और सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देने और छोटे व्यवसायों, हस्तशिल्प परिवहन आतिथ्य और अन्य सेवाओं के लिए अपार अवसर प्रदान किये।

ग्रामीण पर्यटन के तीन अभिन्न अंग है। (1) होमस्टे (2) डेस्टिनेशन वेडिंग्स (3) मेडिकल टूरिज्म भारत सरकार की नीतियाँ इन क्षेत्रों को सुगम और सशक्त बनाने पर केन्द्रित है। योग और आयुर्वेद प्राचीन भारत की परम्पराओं से जुड़े हैं जिनके अवशेष आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में जिन्दा है। चिकित्सा पर्यटन भारत का एक उभरता हुआ, पर्यटन क्षेत्र है। जिसे और आधिक सशक्त करने के लिए वित्त वर्ष 2025–26 में बजट में घोषणा की गई की मेडिकल टूरिज्म और हील इन इंडिया पहल को निजी क्षेत्र की साझेदारी में बढ़ावा दिया जाएगा। केन्द्र सरकार ने ग्रामीण पर्यटन की एक विशेष पर्यटन उत्पाद

Paper: Received: 04.06.2026 Reviewed: 12.06.2026 Accepted: 19.06.2026 Published: 29.06.2026

के रूप में पहचान की है जिसके विकास की आवश्यकता है। ग्रामीण पर्यटन अनुभवात्मक पर्यटन को बढावा देता है। जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था और पर्यटक दोनों को ही लाभ हो रहा है। पर्यटन मंत्रालय द्वारा वर्ष 2023 की शुरू की गई सर्वश्रेष्ठ पर्यटन ग्राम प्रतियोगिता, क्षमता निर्माण सत्रों और कनेक्टिविटी के माध्यम से विपणन व डिजिटल बुनियादी ढांचे की चुनौतियों का सामना करने में गाँवों की सहायता करके उन्हें और आधिक आकर्षक पर्यटक स्थल बनाने की दिशा में प्रोत्साहित किया है। वर्ष 2023 मे 250.19 करोड़ घरेलु पर्यटक आए थे। वर्ष 2023–24 में पर्यटन क्षेत्र ने 8.5 करोड़ रोजगार सृजित किये जिसमे अधिकाश प्रतिशत ग्रामीण पर्यटन से जुड़े लोगों का है।

तालिका सं0 2

भारत में घरेलू पर्यटक एवं प्राप्त आय

वर्ष	घरेलू पर्यटक (करोड़ में)	प्राप्त मुद्रा अमेरिकी डालर में अरब
2019	232	30
2020	61	13
2021	68	9
2022	173	21
2023	251	28
2024	295	33

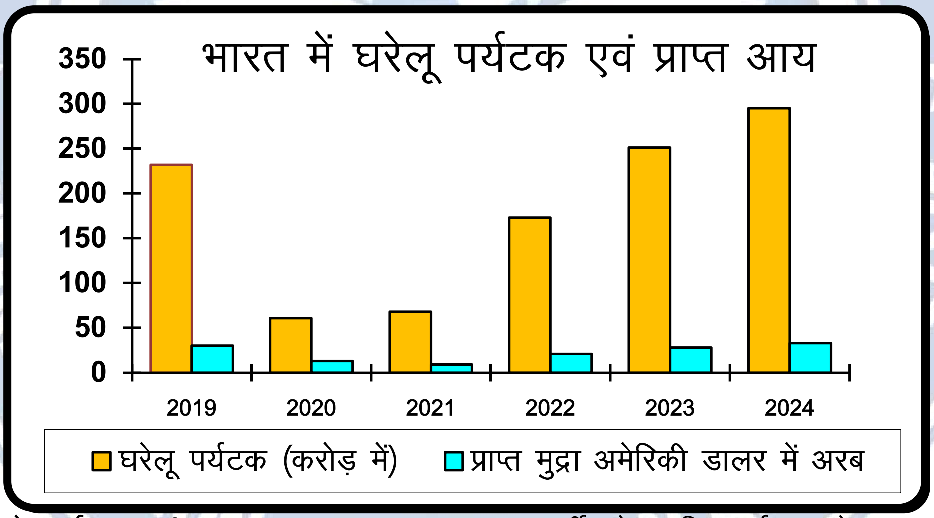

ग्रामीण क्षेत्रों मे पर्यटन एवं स्वास्थ्यः– यह कहना अदूरदर्शी होगा कि पर्यटन केवल मनोरंजन की आवश्यकताओं से प्रेरित होता है। एम०आई०सी०ई० स्वास्थ्य, चिकित्सा, सहासिक कार्य इत्यादि द्वारा भी पर्यटकों का आवागमन बढ़ता है। ग्रामीण क्षेत्रों में, स्वास्थ्य आधारित पर्यटन आज बेहद प्रासंगिक और सम्भावनाओं से भरा पड़ा है। भारत जैसा देश जहाँ पारम्परिक चिकित्सा पद्धतियॉ और ग्रामीण जीवन शैली स्वयं में ही उपचारात्मक है, ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य आधारित पर्यटन वह पर्यटन है जिसे पर्यटक शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ सुधार के उद्देश्य से ग्रामीण क्षेत्रों की यात्रा करने की इच्छा व्यक्त करता है। ग्रामीण पर्यटन इलाज के साथ–साथ प्राकृतिक वातावरण मे विश्राम, योग, ध्यान, आयुर्वेद, पंचकर्म, प्राकृतिक चिकित्सा, जैविक भोजन मानसिक शान्ति डिजिटल दुनिया से दूर तथा ग्रामीण जीवन शैली का अनुभव प्राप्त करने के लिए करता है। आज की भागदौड़ भरी नगरीय

Paper: Received: 04.06.2026 Reviewed: 12.06.2026 Accepted: 19.06.2026 Published: 29.06.2026

जीवन शैली से थके हारे लोग स्लो लाईफ और प्रकृति की तलाश में गाँवों की ओर रुख करते हैं। जिसके अनेक लाभ है–

1. स्थानीय रोजगार में वृद्धि होती है।
2. हस्तशिल्प तथा स्थानीय उत्पादों की बिक्री में वृद्धि होती है।
3. महिला स्वास्थ्य समूहों को अनेक अवसर प्राप्त होते है।
4. पारम्परिक ज्ञान जैसे आयुर्वेद, यूनानी जैसी चिकित्सा पद्धतियों को संरक्षण मिलता है।
5. लोक उपचार परम्पराओं को पुनजीवन मिल रहा है।
6. पर्यावरण तथा जैव विविधता का संरक्षण होता है।
7. ग्रामीण संसाधनों के सन्तुलित उपयोग में मदद मिलती है। भारत में विभिन्न पहाड़ी राज्यों, केरल तथा पूर्वोत्तर राज्यों तथा राजस्थान, हरियाणा एवं दक्षिण भारत के अनेक ग्रामीण राज्यों में इसके विकास की अपार सम्भावनाएँ हैं।

तालिका – 03

भारत में स्वास्थ्य एवं वेलनेस पर्यटन का कुल उद्योग

वर्ष	कुल उद्योग (अमेरीकी डालर में)
2021	12.4
2022	14.8
2023	16.9
2024	19.4

स्रोत–दी टाईम्स ऑफ इण्डिया के अनुसार

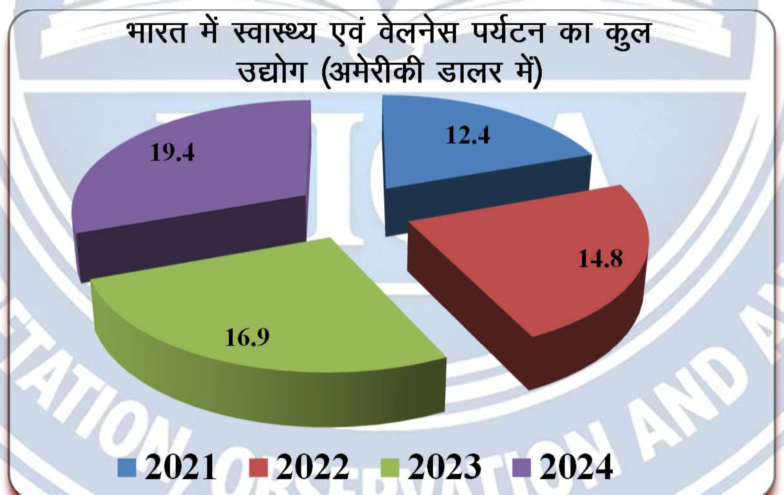

कृषि और पर्यटनः– ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि और पर्यटन सामाजिक आर्थिक और पर्यावरणीय विकास का एक प्रगतिशील मॉडल है। कृषकों के लिए कृषि पर्यटन कृषि कार्यों का विस्तार करने, कृषि भूमि की गुणवता में वृद्धि करने, आकार में छोटे खेतों के लिए दीर्घकालिक स्थिरता बढ़ाने, कृषि आधारित उत्पादो को नये तरीकों से प्रचार और विपणन करने तथा नए उपभोक्ता बाजार विकसित करने का एक संभावित तरीका है। इसके द्वारा ग्रामीण समुदाय की भागीदारी और सशक्त बन सकती हैं। इससे ग्रामीण व्यवसायों, बुनियादी ढाँचे के विकास और सेवाओं के लिए और अधिक आय प्राप्त हो

Paper: Received: 04.06.2026 Reviewed: 12.06.2026 Accepted: 19.06.2026 Published: 29.06.2026

सकती है। इसके द्वारा ग्रामीण परम्पराओं, कला, शिल्प आदि के बाजार के साथ रोजगार सृजन के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिल सकती है।

तालिका–4

उत्तर भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि, ऋतु और लोकजीवन से संबंध

राज्य / क्षेत्र	कृषि स्थिति (कार्तिक काल)	ऋतु परिवर्तन	लेकजीवन / पर्व रूप	प्रमुख मेला / आयोजन	शासन द्वारा प्रोत्साहन
उत्तर प्रदेश	खरीफ फसल कटाई पूरी, रबी बुवाई शुरू	वर्षा ऋतु समाप्त, ठंड की शुरुआत	गंगा–स्नान, दीपदान, धार्मिक मेले	वाराणसी देव दीपावली, अयोध्या दीपोत्सव	'स्वदेश दर्शन' योजना के तहत पर्यटन विस्तार
बिहार	धान कटाई पूर्ण, गेहूँ–चना बुवाई आरम्भ	शीतऋतु का आगमन	कार्तिक स्नान, लोकगीत, तीर्थ–यात्रा	सिमरिया गंगा मेला, राजगीर मेला	'PRASHAD' योजना से गंगा घाटों का विकास
राजस्थान	खरीफ पशु–चारा कटाई, रबी तैयारी	सूखी ठंडी हवाएं शुरू	पशु व्यापार, लोकनृत्य, मेले	पुष्कर मेला (पशु+आस्था संगम)	पर्यटन विभाग द्वारा अंतर्राष्ट्रीय प्रचार
पंजाब / हरियाणा	धान कटाई पूर्ण, गेहूँ की बुवाई चालू	शीतऋतु का आगमन	गुरूपर्व, कार्तिक स्नान	अमृतसर देव दीपावली	'*हेरिटेज वॉक*' पर्यटन पहल

(**स्रोत**: कृषि मंत्रालय, भारतीय मौसम विभाग, राज्य पर्यटन पोर्टल, और विकिपीडिया 2024 तक के आँकड़े)

संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन ने पर्यटन को एक सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिघटना माना है। भारत के भी अनेक राज्य कृषि पर्यटन का अभ्यास कर रहे है जिनमें महाराष्ट्र, केरल, गुजरात, कर्नाटक, पंजाब, नागालैंड तथा हरियाणा आदि शामिल है। जैसे महाराष्ट्र ने 2005 में ए०टी०डी०सी० की स्थापना करके कृषि पर्यटन को औपचारिक रूप दिया। अभी तक यहाँ 1000 से अधिक कृषि पर्यटन केन्द्र पंजीकृत हो चुके हैं। महाराष्ट्र सरकार ने अपनी पर्यटन नीति के द्वारा 500 खेतों को कृषि पर्यटन केन्द्र के रूप में मान्यता दी है। ठीक इसी तरह केरल में स्थापित कृषि पर्यटन बहु–राज्य सहकारी समिति लिमिटेड (ATCO5) कृषि और पर्यटन गतिविधियों को बढ़ाने के लिए भारत सरकार के केन्द्रीय रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत है। यह समिति मसालों

की खेती, होमस्टे जैविककृषि, रिसॉटर्स, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, बैंक वाटर टूरिज्म आदि पर ध्यान केन्द्रित कर रहे है।

विश्व स्तर पर भी विभिन्न देशों में ग्रामीण विकास के लिए संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक विकास संगठन और संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन की तकनीकी सहायता से कृषि पर्यटन को बढावा दिया जा रहा है। इसके अतिरिक्त GEF-UNIDO पहल के तत्वाधान में UNIDO– इण्डिया फोर्स परियोजना 24 जुलाई, 2024 को भारत में शुरू की गयी जिसका प्रमुख उद्देश्य पर्यावरण–अनुकूल फसल सुरक्षा समाधान को बढ़ावा देना है।

Paper: Received: 04.06.2026 Reviewed: 12.06.2026 Accepted: 19.06.2026 Published: 29.06.2026

ग्रामीण पर्यटन एवं मेलें:– ग्रामीण जनजीवन परम्पराओं में स्थानीय मेलों का अत्यन्त महत्व है। स्थानीय कृषक, किसानी के समय चक्र, ऋतु परिवर्तन और जीवन से अत्यन्त गहराई से जुड़ा रहता है। जैसे उदाहरण के लिए कार्तिक पूर्णिमा पूरे भारत विशेष रूप से उत्तर भारत में कृषि चक्र की संक्रमण रेखा है। जहाँ खरीफ फसल का समापन और रबी सत्र का आरम्भ होता है। यह समय ग्रामीण समाज के लिए आराम मेल–जोल और आस्था का प्रतीक बन गया है। मेलों में स्थानीय ग्रामीण कारीगर, बुनकर और कलाकार अपनी–अपनी वस्तुओं के ब्रिकी करते है जैसे मिट्टी के बर्तन, लोक चित्रकला, आभूषण जड़ित कपड़े आदि अनेक वस्तुए न केवल ग्रामीण सांस्कृतिक पहचान को दर्शाती है अपित ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी सशस्त करती हैं। मेलों में लोक नृत्य, लोकगीत, नौटंकी, कटपुतली नृत्य और झूले जैसे पारंपरिक मनोरंजन कार्यक्रम पर्यटकों को आकर्षित करते हैं जिससे ग्रामीण संस्कृति का संरक्षण होता रहता है। ग्रामीण क्षेत्रों के पारम्परिक खान–पान जैसे सत्तु, लिट्टी चोखा, बाजरे की रोटी, गुड़–चना, सरसों का साग और चने की रोटी स्थानीय देशी मिठाइयाॅ जैसे अनेक स्थानीय ग्रामीण व्यंजन भी पर्यटकों को भारतीय ग्रामीण जीवन के स्वाद की झलक दिखा कर अपनी और आकर्षित करते हैं। संस्कृति मंत्रालय ने भी देश में सात क्षेत्रीय सांस्कृति केन्द्र स्थापित किए हैं। जिनके माध्यम से लोक और जनजातीय कलाओं का भी संरक्षण किया जा सके। राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव और लोक रंग आदि महोत्सव जैसे आयोजनों से स्थानीय कलाकारों को मंच मिलता है और ग्रामीण परम्पराओं को जनजीवन प्राप्त हो रहा है।

ग्रामीण पर्यटन एवं उत्सव परम्पराऐं:– ग्रामीण उत्सव केवल रीति–रिवाज और आयोजन तक ही सीमित नहीं होते। भारत की आत्मा उसके रीति–रिवाजों और उत्सवों में बस्ती है। फसल कटाई से लेकर ऋतु परिवर्तन तक–हर अवसर का उत्सव के रूप में स्वागत करने की परम्परा ने न सिर्फ सामाजिक ताने–बान को मजबूत किया है अपितु ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी गहराई से प्रभावित किया है। विकसित भारत की दिशा की ओर अग्रसर होते भारत वर्ष में ग्रामीण उत्सव और त्योहार का महत्व आर्थिक गतिविधियों को सशक्त करने की दिशा में और अधिक हो सकता है। विगत दशक से ग्रामीण पर्यटन की धारणा को नया रूप और नई दिशा मिली है। भारत के उनके राज्यों ने त्योहारों को ही अपनी पहचान बना लिया है जो पर्यटकों को आकर्षित कर रहें है। उदाहरण के लिए हरियाण का सूरजकुन्ड अन्तराष्ट्रीय शिल्प मेला ग्रामीण हस्तशिल्प को वैश्विक मंच प्रदान करता है। झारखण्ड के जोहड़ ग्राम जैसे मॉडल ग्रामीण लोक संस्कृति को आधुनिक पर्यटन से जोड़ रहे हैं। इसी प्रकार राजस्थान का पुष्कर मेला, बिहार में छठ पूजा, झारखण्ड में तुसु परब, तमिलनाडु में पोंगल, केरल में त्रिशूर पूरम आदि। इस आयोजनों में स्थानीय और बाहरी पर्यटक करोड़ो की संख्या मे शामिल रहते हैं। जिनसे इनका प्रत्यक्ष आर्थिक प्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों पर पड़ता है। जिससे न केवल ग्रामीण पर्यटन में त्योहरों की भागीदारों से राज्य की पहचान बनती है अपितु यह गाँव के सतत विकास का आधार बनते जा रहे है।

Paper: Received: 04.06.2026 Reviewed: 12.06.2026 Accepted: 19.06.2026 Published: 29.06.2026

(तालिका–5)
ग्रामीण उत्सव और सरकारी पहलें एक नजर

योजना /पहल	संचालन संस्था	उद्देश्य /मुख्य विशेषताएँ	नवीनतम स्थिति / आँकड़ें	ग्रामीण उत्सवों पर प्रभाव
स्वदेश दर्शन 2.0	पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार	ग्रामीण, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पर्यटन को प्राथमिकता, ग्रामीण मेले और त्योहार पर्यटन परिपथ में शामिल	52 परियोजनाओं के लिए 2,108.87 करोड़ रुपये स्वीकृत	राज्यों में ग्रामीण उत्सवों का ढांचा मजबूत, स्थानीय रोजगार और पर्यटन में वृद्धि
प्रसाद (PRASHAD) योजना	पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार	धार्मिक पर्यटन स्थलों का कायाकल्प, स्थानीय धर्मस्थल पर्यटन परिपथ में शामिल	कई नए प्रोजेक्ट मंजूर	धार्मिक त्योहारों पर पर्यटकों को बेहतर सुविधाएँ, स्थानीय व्यवसाय में वृद्धि
अतुल्य भारत अभियान	पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार	ग्रामीण उत्सवों को वैश्विक दर्शकों तक पहुँचाना, राज्यों के मेलों की डिजिटल ब्रांडिंग और प्रचार	–	विदेशी पर्यटकों की संख्या में वृद्धि, ग्रामीण संस्कृति को अंतरराष्ट्रीय पहचान
दीनदयाल अंत्योदय योजना–राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन	ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार	ग्रामीण महिलाओं और स्वयं सहायता समूहों को सशक्त करना, मेले और उत्सवों में SHG की भागीदारी	30 जून 2024 तक 90.8 लाख से अधिक SHG और 10.05 करोड़ महिलाएं सक्रिय	मेले में स्टॉल और सामूहिक बिक्री से आय में वृद्धि
ट्राइफेड / वन धन विकास केंद्र	आदिवासी कार्य मंत्रालय, भारत सरकार	आदिवासी उत्पादों का वन धन केंद्रों के माध्यम से मूल्य संवर्धन	देशभर में सैकड़ों केंद्र स्थापित	उत्सवों और मेलों में वन उत्पादों की बिक्री से आय
राज्यस्तरीय निवेश पैकेज	राज्य सरकारें	राज्य प्रायोजित मेलों और क्लस्टर पैकेज के माध्यम से निवेश और विकास	2024 में कई राज्यों में घरेलू पर्यटक वृद्धि और निवेश प्रस्ताव दर्ज	राज्य–प्रायोजित मेलों और क्लस्टर पैकेज से उत्सवों का व्यावसायिक विस्तार
आत्मनिर्भर भारत अभियान–पर्यटन ग्राम पहल	ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार एवं राज्य सरकारें	चयनित गाँवों को पर्यटन ग्राम के रूप में विकसित करना, स्थानीय हस्तशिल्प आयोजनों को प्रोत्साहन, महिला SHG की भागीदारी	–	ग्रामीण अर्थव्यवस्था में नई ऊर्जा, महिलाओं और युवाओं को रोजगार के अवसर

Paper: Received: 04.06.2026 Reviewed: 12.06.2026 Accepted: 19.06.2026 Published: 29.06.2026

ग्रामीण पर्यटन और वाइब्रेन्ट विलेज प्रोगामः– भारत सरकार द्वारा वर्ष 2023 में कुछ गाँवों को चिन्हित करके उनके व्यापक विकास हेतु (वीवीपी) शुरू किया जिसके अन्तर्गत सड़क सम्पर्क, आवास और गाँवो में बुनियादी ढांचा को मजबूत करना दूरसंचार सम्पर्क को बढ़ाना पारम्परिक विद्युत, आपूर्ति और नवीकरणीय उर्जा तथा स्थानीय संसाधनों के द्वारा आजीविका सृजन जैसे केन्द्रीत क्षेत्रों में हस्तक्षेपों को समर्थन दिया गया। इसका प्रमुख उद्देश्य गाँव स्तर पर विकास, और विकास के लिए पहचाने गए प्रमुख क्षेत्रों में से एक पर्यटन ग्राम को बढ़ावा देना है। वीवीपी के अन्तर्गत होमस्ट के साथ पर्यटकों को आकृर्षित करने के लिए स्थानीय मेलों और त्योहारों को बढ़ावा दिया गया है। भारत सरकार ने वाइब्रेन्ट विलेजेस प्रोग्राम को एक केन्द्र प्रायोजित योजना के रूप में शुरू किया है, जिसका वित्तीय बजट 4800 करोड़ रुपये रखा है तथा यह वित्तीय वर्ष 2022–23 से 2025–26 तक के लिए है। उत्तर भारत की अन्तराष्ट्रीय सीमाओं पर स्थित गाँवो के लिए पहली बार इतनी धनराशि आबंटित की है। यह वर्तमान भारत के दृष्टिकोण के अनुसार जो भारत का अन्तिम गाँव कहलाता था को अब प्रथम गाँव कहा जाता है। प्रथम चरण में वीवीपी को चार राज्यों और एक केन्द्रशासित प्रदेश के 19 जनपदों ओर सीमावर्ती 46 विकास खण्डों के 663 चयनित ग्रामों में लागू किया गया था। जिला प्रशासन ने सम्बन्धित ग्राम पंचायतों के सहयोग से प्रत्येक गाँव के लिए जीवन्त ग्राम कार्य योजनाएं तैयार की है। जो गाँव की पर्यटन क्षमता पर

केन्द्रित है। स्थानीय युवाओं और महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करते हुए एक गाँव एक उत्पाद की अवधारणा पर पारिस्थितिकीय रूप से सुदृढ़ और आर्थिक रूप से लाभदायक कृषि व्यवसायों को बढ़ावा दिया गया है। इस वर्ष गणतन्त्र दिवस समारोह पर वीवीपी गाँवों से विशिष्ट अतिथियों को भी आमन्त्रित किया गया। ग्राम पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 48 करोड़ रुपये की लागत से 102 परियोजनाओं के माध्यम से लक्षित गाँवों में व्यू पॉइन्ट, साहासिक पर्यटन इको रिसोर्ट और पर्यटन केन्द्र विकसित किए गए हैं। वीवीपी की सफलता को देखते हुए, भारत सरकार ने अप्रैल 2025 में इसके दूसरे चरण (वीवीपी–II) को मंजूरी दे दी है। यह कार्यक्रम 2028–29 तक जारी रहेगा और इस पर 6839 करोड़ रूपये का व्यय होगा।

ग्रामीण पर्यटन और बीटीवीसी प्रोग्रामः– भारत सरकार के पर्यटन मन्त्रालय ने ग्राम पर्यटन को गति और प्रोत्साहन देने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ पर्यटन ग्राम प्रतियोगिता (बीटीवीसी) शुरू की है। इसे प्रारम्भिक चरण (2023) में 31 राज्यों और केन्द्रशासित राज्यों के 315 जनपदों से कुल 795 गाँवों से आवेदन प्राप्त किये गये। निर्धारित मानदंडों पर खरे उतरे कुल 35 गाँवों का चयन भारत के सर्वश्रेष्ठ गाँवों के रूप में किया गया। बीटीवीसी के दूसरे चरण (2024) में 30 राज्यों के और केन्द्रशासित राज्यों के 991 आवेदन में से कुल 36 गाँवों को आठ श्रेणियों जैसे साहासिक पर्यटन, कृषि पर्यटन, शिल्प विरासत समुदाय आधारित पर्यटन, आत्याधिक पर्यटन, उत्तरदायी पर्यटन तथा कल्याण या जीवन्त गाँव में विजेताओं के रूप में मान्यता दी गई। इन सभी गाँवो ने समुदाय आधारित मूल्यों और सभी पहलुओं में स्थिरता के प्रति प्रतिबद्धता के माध्यम से सांस्कृतिक और प्राकृतिक सम्पतियों के संरक्षण और संर्वधन के लिए सर्वोतम प्रदर्शन किया। विजेता गाँवों की सर्वोत्तम प्रथाओं को मौजूदा मॉडलों के अनुकरण और गॉवों के विकास के लिए अन्य गाँवों के साथ साझा किया, तथा सिद्व किया की गाँव पर्यटन स्थानीय अर्थव्यवस्था का मुख्य प्रेरक बन सकता है।

ग्रामीण पर्यटन और होमस्टे मॉडल– भारत में ग्रामीण पर्यटन के बदलते परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण होमस्टे की अपनी महत्वपूर्ण भूमिका है। ये न सिर्फ सांस्कृतिक आदान–प्रदान व आर्थिक विकास को

Paper: Received: 04.06.2026 Reviewed: 12.06.2026 Accepted: 19.06.2026 Published: 29.06.2026

बढ़ावा देता है अपितु आवास की कमी को भी प्रभावी तरीके से दूर करता है। पर्यटक आज विलासिता के स्थान पर प्रमाणिकता और सुविधाओं के स्थान पर अपने पन की तलाश कर रहे है। इस बदलाव को होमस्टे जिसे पहले बहुत ही छोटे पैमाने पर आकाँ जाता था आज भारत में पर्यटन अर्थव्यवस्था की क्रान्तिकारी पहल के रूप में ऊभरें है। नीति आयोग 2025 की रिपार्ट **होमस्टे पर पुनविचार : नीतिगत मार्ग** से पता चला है कि यह व्यवस्था अप्रयुक्त अवसरों के कारण पिछड़ रही हैं। कॉग्निटिव मार्केट रिसर्च के अनुसार होमस्टे अब पर्यटन के सबसे तेज गति के बढ़ते क्षेत्रों में से एक है। इसकी वर्ष 2031 तक 11 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ने की सम्भावना है। होमस्टे मॉडल एक प्राचीन भारतीय विचार अतिथि देवों भवः के विचार को चरितार्थ करता है।

तालिका –6

प्रमुख राज्यों में निधि पोर्टल पर पंजीकृत ग्रामीण होमस्टे सुविधाओं की संख्या (10 या 10 से अधिक संख्या वाले राज्य)

राज्य	कुल संख्या	राज्य	कुल संख्या
अरूणाचल प्रदेश	33	महाराष्ट्र	43
असम	28	ओडिशा	14
गोवा	26	राजस्थान	10
हिमाचल प्रदेश	68	सिक्किम	16
केरल	77	तमिलनाडु	137
मध्यप्रदेश	50	उत्तर प्रदेश	955
उत्तराखण्ड	93	पश्चिम बंगाल	570

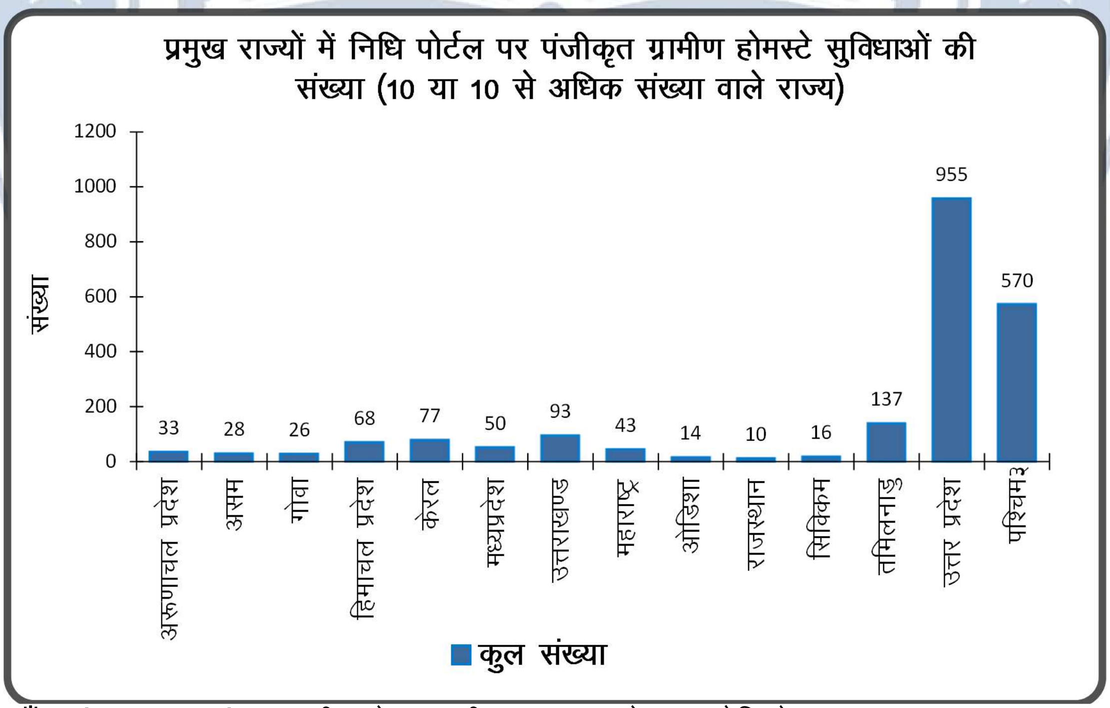

चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएं:— अपनी अनेक अशीम सम्भावनाओं के पश्चात भी ग्रामीण पर्यटन को अनेक चुनौतियों का सामना करना पढ़ रहा है। कई गाँवों में अभी भी पर्याप्त आधारभूत

Paper: Received: 04.06.2026 Reviewed: 12.06.2026 Accepted: 19.06.2026 Published: 29.06.2026

सुविधाओं का अभाव है। स्वच्छता, सीमित परिवहन के साधन आधारभूत सुविधाओं की कमी व कमजोर कनेक्टिविटी आज भीप्रमुख समस्या है। आतिथ्य, मार्गदर्शन और सांस्कृतिक व्याख्या के लिए प्रशिक्षण व्यवस्था का अभाव है इसके अतिरिक्त अत्यधिक व्यवसायिकरण प्रामाणिकता को कम करता है और विरासत को वस्तु रूप में देने का जोखिम पैदा कर सकता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि पर्यटन एक विशिष्ट क्षेत्र है। भारत आज विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के रूप में उभर रहा है। भारत के लगभग 6.65 लाख गाँव है, जिसकी संस्कृति और फसल पद्धति में अद्वितीय तालमेल है। कृषि और पर्यटन से होने वाले लाभ को अधिकतम स्तर पर पहुँचाने के लिए स्थायी ग्रामीण परिदृश्य की पहचान कराना आवश्यक है। भारत की विविध सांस्कृतिक परम्पराएं सदियों से लोक जीवन, कृषि चक्र और उत्सवों से जुड़ी रही है। अनेक मेलों जैसे आयोजन इस सांस्कृतिक एकता और ग्रामीण चेतना के जीवन्त प्रतीक है। परन्तु आज भी यह क्षेत्र अनेक चुनोतियों से गुजर रहा है जैसे–पारम्परिक कलाओं का बाजार सीमित है तथा उपभोक्ता से दूरी बनी हुई है। नई पीढ़ी में लोककलाओं के प्रति रूचि घटती जा रही है। मेलों और उत्सवो में भीड़ प्रबंधन एवं पर्यावरणीय असन्तुलन की समस्या है। ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल माध्यमों पर स्थानीय संस्कृति के प्रचार प्रसार की भी अत्यन्त कमी है।

अपनी परिवर्तनकारी क्षमताओं के पश्चात भी ग्रामीण भारत में इको–टूरिज्म को भी गम्भीर चुनौतियो से गुजरना पढ़ रहा है जिससे इसकी स्थिरता में कमी बनी हुई है। इसकी सबसे प्रमुख समस्या अति व्यावसायीकरण और ग्रीनवाशिंग को जोखिम है, जहाँ सतही परिस्थितिकी लेबल अस्थायी प्रथाओं को छिपा देता है। जिससे जहाँ एक और इसके सांस्कृतिक और पारिस्थितिकीय अनुभवों की प्रमाणिकता को कमजोर करती है वहीं इसकी दीर्घकालिक स्थिरता को भी खतरे में डाल देता है। दूसरी एक चुनौती वहन क्षमता में प्रबन्धन की है। आये दिन विभिन्न राष्ट्रीय उद्यानों, तथा अनेक लोकप्रिय स्थलों में अत्यधिक भीड़ देखी जाती है। जिससे स्थानीय पारिस्थितिकी तन्त्र और अवसंरचनात्मक ढाँचे पर दबाव बढ़ता है। कठोर पर्यटन प्रबन्धन और पारिस्थितिकीय दिशा निर्देशों के अभाव में इन स्थलों के क्षरण का खतरा है। पर्यावरणीय दबाव और कचरा प्रबन्धन की कमी, अधिक भीड के कारण पारम्परिक रूप का क्षरण, स्थानीय समुदायों को सामूहिक आर्थिक लाभ का वितरण न होना, मौसम पर निर्भरता और अवसंरचना की कमी कुछ ऐसी चुनौतियाँ है, जिनके समाधान के लिए स्थानीय अवसंरचना विकास हेतु बजट आवंटन, सामुदयिक भागीदारी और प्रौद्योगिकी आदि महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकते हैं।

ग्रामीण उत्सव और त्यौहार सांस्कृति धरोहर और आर्थिक अवसर दोनों को जोड़ने वाला सेतु है। यदि ग्रामीण उत्सवों को व्यवस्थित रूप से पर्यटन नीति, डिजिटल क्रान्ति और सामुदायिक स्वामित्व से जोड़ा जाए तो यह न केवल करोड़ो ग्रामीणों की आय में वृद्धि करेगा अपितु भारत को एक उत्सव पर्यटन केन्द्र के रूप में पहचान दिलाऐगा। इसी तरह कृषि पर्यटन मात्र विदेशी पर्यटकों द्वारा जैविक खेतों का दौरा करना यात्रा ही नहीं है इसमें नीति निर्माताओं नियामकों शिक्षाविदो, किसानों और अन्य व्यक्तियों का आवागमन भी शामिल है। इसमें संस्थागत प्रशिक्षण कार्यशालाओं और कृषि कार्यक्रमों का तेजी से बढ़ता हुआ वर्ग भी शामिल है। कृषि पर्यटन को टिकाऊ और अधिक लाभकारी बनाने के लिए नीतिगत हस्तक्षेप के माध्यम से कृषकों की क्षमता निर्माण, कौशल विकास, वित्तीय सहायता आदि का विकसित करना आवश्यक है। भारत की ग्रामीण कला, सटीकता और सन्तुलन के मूल्यों को दर्शाती है। ग्रामीण पर्यटन के माध्यम से इसे बढ़ावा देना व्यावसायीकरण का कार्य नही अपितु पुनरुद्धार

Paper: Received: 04.06.2026 Reviewed: 12.06.2026 Accepted: 19.06.2026 Published: 29.06.2026

का कार्य है। प्रत्येक यात्रा जो गाँव तक पहुँचती है प्रत्येक वार्तालाप को उपभोग करने के बजाय सुनता है, संरक्षण का एक शान्त संकेत बन जाता है। यह कार्य गाँवों के स्वरूप को बदलने का नहीं है इसका उद्देश्य भारत, भारतीय गाँव को आत्मनिर्भर, रचनात्मक और शांत गर्वित महसूस कराना है। भारतीय गाँव में करघा, ढोल, और छेनी जैसी ध्वनियाँ जो कभी गुम हुई सी लगती थी, ऐसा लगता है कि वो कभी गुम नहीं हुई थी बल्कि सुनाई देन का इंतजार कर रही थी। यदि जिम्मेदारी से कार्य किया जाए तो ग्रामीण इको टूरिज्म के क्षेत्र में भी ग्रामीण समृद्धि, जैव विविधता संरक्षण और टिकाऊ आजीविका का एक व्यापक मार्ग बन सकता है, जिससे सतत विकास में भारत की वैश्विक अग्रणी भूमिका और सुदृढ होगी।

निष्कर्ष एवं सुझावः— भारतीय गाँवों में आगन्तुको को पेश करने के लिए अद्वितीय संस्कृति और विरासत मौजूद है। बुनियादी ढाँचे के विस्तार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में निरन्तर सम्पर्कता में भी वृद्धि हो रही है। ग्रामीण पर्यटन स्थानीय कला और संस्कृति को पुनर्जीवित कर सकता है। 21वीं शदी में ग्रामीण पर्यटन ग्रामीण विकास का एक सशक्त और समावेशी माध्यम बनकर उभर रहा है। अब यह केवल यात्रा या अवकाश गतिविधियों तक ही सीमित नहीं है। बल्कि भारत की सामाजिक आर्थिक उन्नति और परिवर्तन का उपकरण बन चुका है। ग्रामीण क्षेत्रों की सांस्कृतिक विविधता प्राकृतिक संसाधन, लोककला, पारम्परिक कृषि प्रणाली, स्थानीय जीवन शैली की समृद्ध विरासत विद्यमान है जिसका योजनाबद्ध उपयोग ग्रामीण पर्यटन के माध्यम से किया जाए तो यह न केवल आय सृजन अपितु रोजगार वृद्धि और क्षेत्रीय आसमानता को दूर करने का एक प्रभावी मार्ग सिद्ध हो सकता है। इसी क्रम में भारत सरकार द्वारा प्रारम्भ की गई स्वदेश दर्शन और प्रसाद योजना में ग्रामीण क्षेत्रों को विश्व पर्यटन मानचित्र पर आगे लाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पर्यटन मंत्रालय द्वारा ग्रामीण पर्यटन कलस्टर विकास, होमस्टे प्रोत्साहन तथा स्थानीय रोजगार सृजन, हस्तशिल्प संरक्षण तथा सांस्कृतिक पुनरूत्थान को प्रोत्साहित किया है। यदपि विभिन्न शोध निष्कर्ष दर्शाते है, कि ग्रामीण पर्यटन के समुचित विकास में अनेक चुनोतियाँ भी विद्यमान है। जैसे अवसंरचना की कमी, परिहन एवं संचार सुविधाओं की कमी, प्रशिक्षित मानव संसाधन का अभाव, कमजोर विपणन तन्त्र सीमित पूंजी निवेश तथा पर्यावरणीय असन्तुलन आदि। स्पष्ट है कि यदि नियोजन, वैज्ञानिक एवं सतत विकास के सिद्धान्त पर आधारित न हो तो पर्यटन के कारण सांस्कृतिक अपक्षय एव पर्यावरणीय दबाव भी उत्पन्न हो जाता है। अतः पर्यटन को केवल आय सृजन के साधन के रूप में नहीं, अपितु ग्रामीण विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और सतत आजीविका के रूप में विकसित करने की आवश्यकता है।

भारतीय ग्रामीण पर्यटन को प्रभावी, समावेशी एवं सतत बनाने के लिए अनेक सुझाव दिये जा सकते हैं।

1. ग्रामीण पर्यटन विकास की योजनाएँ क्षेत्र में उपलब्ध संसाधन क्षमता के अनुरूप ही होनी चाहिए।
2. स्थानीय समुदायों (ग्राम पंचायत, स्वयं सहायता समूहों, महिला मण्डलों) की सक्रिय भागीदारी होनी चाहिए।
3. ग्रामीण क्षेत्रों में अवसंरचनात्मक सुदृढीकरण किया जाए।
4. स्थानीय युवाओं में कौशल विकास और प्रशिक्षण को बढावा दिया जाए।
5. डिजिटल प्लेटफार्म, सोशल मीडिया एवं ई—पर्यटन पोर्टल के माध्यम से ग्रामीण पर्यटन स्थलों का प्रचार— प्रसार किया जाए।
6. स्थानीय उत्पादों की ब्रांडिंग पर बल दिया जाए।

Paper: Received: 04.06.2026 Reviewed: 12.06.2026 Accepted: 19.06.2026 Published: 29.06.2026

7. निजी निवेश और प्रबन्धन विशेषज्ञता को आकर्षित करने हेतु पीपीपी मॉडल को बढ़ावा दिया जाए।
8. लोक परम्पराओं, कला एवं हस्तशिल्प को प्रोत्साहन देने हेतु विशेष अनुदान एवं प्रदर्शन मंच उपलब्ध किऐ जाएँ।
9. वित्तीय सहायता एवं ऋण सुविधा उपलब्ध करायी जाए।
10. पर्यटन परियोजनाओ के सामाजिक आर्थिक और पर्यावरणीय प्रभाव का नियमित मूल्यांकन किया जाए।
11. ग्रामीण पर्यटन से सम्बन्धित विश्वसनीय आँकडों का संग्रह और विश्लेषण किया जाए।
12. विभिन्न विश्वविद्यालयों शोध संस्थानों को इस दिशा में प्रोत्सहित किया जाए।

अतः हम कह सकते है कि ग्रामीण पर्यटन भारत के लिए एक समावेशी और सतत विकास का प्रभावी मॉडल बन सकता है। आवश्यकता है तो प्रभावी नियोजन, स्थानीय सहभागिता, सतह प्रबन्धन और पारदर्शी नीति–क्रियान्वयन की।

सन्दर्भः–

1. एस०सी० बंसल, पर्यटन भूगोल, राजेश, पाब्लिकेशन, नई दिल्ली 2025
2. हाण्डा ओमचन्द्र, पश्चिमी हिमालय की लोक कलाएँ, इण्डस पाब्लिकेशन कं०, 1988
3. चालक गोविन्द, भारतीय लोक संस्कृति का सन्दर्भ मध्य हिमालय, तक्षशिल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996
4. कुरुक्षेत्र, ग्रामीण पर्यटन विशेषांक प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, जून– 2022
5. कुरूक्षेत्र ग्रामीण पर्यटन विशेषांक, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, नवम्बर– 2025
6. एस०के० शुक्ला एवं हरवीन कौर, कुरूक्षेत्र, ग्रामीण भारतः इको टूरिज्म का उभारता केन्द्र, नवम्बर–2025
7. गरिमा संजय, कुरुक्षेत्र, कार्तिक मेला उत्सव आस्था संस्कृति और पर्यटन का संगम नवम्बर–2025
8. कुरुक्षेत्र, ग्रामीण उत्सवः परम्परा से अर्थव्यवस्था तक नवम्बर–2025
9. सविन्द्र सिंह, पर्यावरण भूगोल का स्वरूप, प्रवालिका पब्लिकेशन, इलाहाबाद, 2016
10. जोशी अतुल, इको–टूरिज्म, तक्षशिला, प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
11. योजना, कुरुक्षेत्र मासिक पत्रिका के विभिन्न विशेषांक

Paper: Received: 04.06.2026 Reviewed: 12.06.2026 Accepted: 19.06.2026 Published: 29.06.2026